Q-I कारक की परिभाषा देते हुए उनके भेदों का सोदाहरण प्रस्तुत करें।

Ans- "क्रिया हेतुः कारकम" अर्थात क्रिया की उत्पत्ति में सहायक हो उसे कारक कहते हैं। प्राकृत में संस्कृत के समान ही कर्ता-कारक, कर्म कारक, करण-कारक सम्प्रदान-कारक, अपादान-कारक है। प्राकृत वैयाकरण ने इस सम्बन्ध को कारक नहीं माना है और न षष्ठी विभक्ति के रूप को ही पृथक स्थान नहीं दिया है, क्योंकि षष्ठी के रूप चतुर्थी के समान ही होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि संबंध का क्रिया के साथ किसी प्रकार का संबंध नहीं है इसी तरह सम्बोधन को भी पृथक रूप में नहीं माना गया है क्योंकि कर्ता-कारक एवं सम्बोधन की विभक्तियाँ एक समान होती हैं।

कारक के निम्नलिखित भेद हैं।

(1) कर्ता-कारक — जो काम करे, उसे कर्ता कारक कहते हैं। स्वतंत्र कर्ता। अर्थात जो स्वतंत्र रूप से काम करता है उसे हम कर्ता कारक कहते हैं। जैसे — सा हसइ, रामो पढइ

(2) कर्म कारक → जिस पदार्थ पर क्रिया के व्यापार का फल प्राप्त होता है, उस पदार्थ से सूचित होने वाली संज्ञा को कर्म कारक कहते हैं। जैसे — सो फलमं खायइ, रामो भोयण करेइ

इसमें क्रिया के व्यापार का फल, फल और भोजन

दोनों में द्वितीय पर पड़ता है। इसीलिए इन दोनों में द्वितीय विभक्ति लगी हुई है। क्रिया विशेष द्वारा जो कर्ता को अत्यन्त अभीष्ट है उसी की कर्म संज्ञा होती है। यथा- पयेण ओदनं भुङ्क्ते। दूध से भात खाता है इस वाक्य में दूध भी भात की कर्ता को प्रिय है, पर कर्ता अपने भोजन व्यापार द्वारा जिसे सबसे अधिक पाना चाहता है वह भात और दूध नहीं होता; दूध पेय है। यह तो केवल भोजन क्रिया के सम्पादन में सहायक है। इसलिए यहाँ पर पयेण की कर्म संज्ञा नहीं है; ओदन की है।

(3.) करण-कारक → अपने कार्य की सिद्धि में कर्ता जिसकी सबसे अधिक सहायता लेता है।
जैसे- रामो रावणं रणभूमि बाणेन हन्ति। इस वाक्य में रावण को मारने में सबसे अधिक सहायता बाण से लेता है। यद्यपि राम बाण और हाथ दोनों से सहायता लेता है। परन्तु रावण को मारने में अधिक सहायक बाण ही है। इसलिए बाण में तृतीया विभक्ति लगी है।

(4.) सम्प्रदान-कारक → दान कार्य के द्वारा जिसे संतुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा- वह ब्राह्मण के लिए गौ देता है। स विप्राय गावं ददाति। इस वाक्य में चतुर्थी विभक्ति लगी हुई है।

(5) अपादान-कारक → जिससे किसी वस्तु का विश्लेषण हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक में पंचमी विभक्ति लगती है। यथा = वह दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।

सो धावती आरसती पड़इ

(6) अधिकरण-कारक → कर्ता और कर्म के द्वारा किसी भी क्रिया का आधिकरण कारक कहलाता है।

यथा - वह गाँव में रहता है।

सो गामे परिवसइ अधिकरण मेसप्तमी विभक्ति लगती है।